फ़िल्मकार फिल्म के साथ

(दृश्य और कथ्य : संदर्भ सिनेमा विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का अंतिम दिन)

वर्धा, 30 जनवरी, 2018; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला (फ़िल्म एवं रंगमंच) विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन की शुरुआत देश के प्रख्यात फ़िल्म निर्देशक एवं पटकथा लेखक मधुर भंडारकर के स्वागत एवं अभिनन्दन के साथ हुआ। विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. मनोज कुमार द्वारा उनका स्वागत स्मृति चिन्ह, सूत की माला, शॉल तथा कैलेण्डर भेंट स्वरूप प्रदान कर किया गया। तत्पश्चात उनकी फ़िल्म 'मुंबई मिस्ट' दिखाई गई। फ़िल्म ख़त्म होते ही भंडारकर ने विद्यार्थी तथा

शोधार्थियों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब दिए। पद्मावत फ़िल्म पर हो रहे विवाद के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि सेंसर बोर्ड से पास हुई प्रत्येक फ़िल्म का निर्विरोध प्रदर्शन होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति या संगठन को यह हक़ नहीं कि वह इन फिल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगाए। एक अन्य सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म 'त्रिशक्ति' के फ्लॉप होने का कारण मार्केट के दबाव को बतलाया। उन्होंने कहा कि 'त्रिशक्ति' के बाद की फिल्मों के निर्माण के दौरान उन्होंने अपने दिल की सुनी और नतीजे के रूप में उन्हें कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार मिले। दैनिक भास्कर के संपादक प्रकाश दुबे ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रकाश दुबे ने कहा कि जब फिल्मों से निम्न वर्ग गायब हो रहा था तब मधुर भंडारकर ने अपनी फिल्मों में उन्हें स्थान दिया जो काबिलेतारीफ है। कार्यक्रम का संचालन प्रदर्शनकारी कला विभाग में मानद प्रोफेसर तथा संगोष्ठी समन्वयक राकेश मंजुल ने किया।